अनूठा प्रयोग

शिगाफ़

(मनीषा कुलश्रेष्ठ)

ललित श्रीमाली

अनूठा प्रयोग: शिगाफ़
(मनीषा कुलश्रेष्ठ)

मनीषा कुलश्रेष्ठ का उपन्यास 'शिगाफ़' एक नए ढंग का अनूठा प्रयोग है। 'शिगाफ़' यानि एक दरार जो कश्मीरियत में स्थायी तौर पर पड़ गई है। इसमें से धर्मनिपेक्षता एक हद तक रिस चूकी है। लेखिका ने इस कथा को अलग कोण, नए प्रयोग के साथ अनूठे ढंग से प्रस्तुत किया है। संजीव लिखते हैं- ''शिगाफ़ उपजीव्य के स्तर पर कश्मीर की ज्वालामुखी समस्या पर खड़ा है। ज्वालामुखी इसलिए भी कि इसके स्रोत के संधान और इसके प्रभावी समाधान किसी भी रचनाकार के लिए आग में हाथ डालने जैसे है। स्त्री होने के नाते किसी रचनाकार के लिए तो और भी.....।''(संजीव: नई पीढ़ी के पाँच उपन्यास, अन्यथा (16) लुधियाना, जून 2011, पृ. 42) यह भी संभव हो सकता कि इसी वजह से लेखिका को प्रत्यक्ष शोध में न जाकर इंटरनेट चैट, ब्लॉग, डायरी का अधिकाधिक सहारा लेना पड़ा और यह सहारा एक नए प्रयोग को जन्म देता है। उपन्यास की नायिका अमिता एक युवा लेखिका है। स्पेन में अनुवाद और लेखन कार्य करती है। वहाँ एक स्पेनिश लेखक इयान बांड के सम्पर्क में हैं। इयान बांड अमिता को कश्मीर पर लिखने के लिए प्रेरित करता है। वह बताता है कि हमारे यहाँ भी यही समस्या थी, ''तुम्हारा कश्मीर मामला कुछ-कुछ ऐतिहासिक बास्क संघर्ष से मिलता है, डियर हमने भी तो हल निकाला था। हमारे यहाँ बास्क समुदाय की अपनी स्वतंत्र पहचान है। वे अपने हितों का फैसला खुद करते हैं। जहाँ तुम रह रही हो नवारा, यह स्वायत्तशासी बास्क स्टेट है।.....अमिता बताती है, हमारे यहाँ हल निकालना इतना आसान नहीं है.....कश्मीर अकेले में ही हम तीन तरह के कश्मीरी है। कश्मीरी हिन्दू, कश्मीरी सुन्नी और कश्मीरी शिया, सूफी और खनाबदोशों की बात अलग से करें..... फिर लेह बौद्धकुल और जम्मू हिन्दू बहुत है। यहाँ धार्मिक पहचान ज्यादा बड़ा मसला है। हल बेहद मुश्किल।''(शिगाफ़, पृ. 38-39) जब इयान बांड कहता है कि हमारे यहाँ भी उन दिनों यही सोचा गया था कि इस संघर्ष का हल नहीं निकलेगा सदियां गुजर जाएगी.....पर आखिरकार हल निकला.....। अमिता सोच में पड़ जाती है कि ''इसे कैसे समझाऊँ? क्या बताऊँ कि 'ये इश्यू' अब भारत और पाकिस्तान के बीच ही नहीं रहा है, इसके सुलझावों और उलझावों के बीच चीन और अमेरिका भी अपने काँटे डाल चुके हैं। उनकी भी युद्ध नीतियों का अहम मुद्दा है, ये।''(शिगाफ़, पृ. 39) इयान बांड और अमिता दोनों विस्थापित हैं। इयान के पिता ने अपने बचपन

में गुएर्निका की विभीषिका देखी थी, अनुभव को बच्चों से शेयर किया था। यही विभीषिका इयान और अमिता को जोड़ती है और अमिता स्पेन से लौटकर कश्मीर पर किताब लिखने लगती है। लेखिका स्पेन से भारत लौटकर कश्मीर पर लिखना प्रारम्भ करती है, और कश्मीर लौटकर अपने पुराने घर, अपने पुराने आत्मीय पड़ौसी, कश्मीर के अंदरूनी गाँव, केशर और जाफरान की खेती, मस्जिद में छिपे आतंकवादी, भारतीय सैन्यबल के आचरण, नदी, नाले, पहाड़ बर्फ सबको अपनी पुस्तक में समेटने का प्रयास करती है। युद्ध, घोषित और अघोषित युद्ध, अन्दर-बाहर का विस्थापन, पूरी समस्या को स्पेन, 'रोड टू ला मांचा', इयान बांड, बशीर, शांतनु और जमान, यास्मीन और युसुफ-जलेखा के यात्रा विवरणों को उकेरा गया है। उपन्यास में कश्मीरी मिथक, लोक कथाएँ, परिवेश सब कुछ है।

इक्कीसवीं सदी के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में परम्परिक कथा शिल्प के भरोसे न रहकर भरपूर प्रयोग किए हैं। आज उपन्यासों का उपजीव्य, कथा पद्धति, घटनाओं का समन्वय, संवाद योजना, वर्णन पद्धति सब कुछ बदल रहा है। सभी क्षेत्रों में प्रयोग हो रहे हैं। प्रयोग और नवाचार के तहत हिंदी उपन्यासों में एक महत्त्वपूर्ण परिवर्तन यह आया है कि कहानी कहने का ढंग बदल गया है। जहाँ पहले परंपरागत वर्णन होता था उसकी जगह अब उपन्यासों में कहीं पात्र स्वयम् अपनी कहानी कह रहे हैं, कहीं पर तकनीक (इंटरनेट, ब्लॉग चैट) के माध्यम से कहानी आगे बढ़ रही है।

मनीषा कुलश्रेष्ठ ने अपने पहले उपन्यास 'शिगाफ़' में उपन्यास की कहानी को आगे बढ़ाने में प्रत्यक्ष शोध में न जाकर इंटरनेट चैट, ब्लॉग, डायरी का सहारा लिया। इसका प्रथम कारण तो हम यह मान सकते है कि कश्मीर की समस्या इस उपन्यास का उपजीव्य है जिसमें किसी भी रचनाकार के लिए आग में हाथ डालने जैसा है और स्त्री रचनाकारों के लिए तो और भी भयावह है। इसलिए उन्होंने कथा का विस्तार करने हेतु जिन साधनों का इस्तेमाल किया उससे उपन्यास में एक नवीन प्रयोग प्रारम्भ हुआ। उपन्यास की शुरुआत से ही यह प्रयोग प्रारम्भ कर दिया गया था। उपन्यास की नायिक 'अमिता' कहती है कि,- ''खाना खाने के बाद बहुत दिनों बाद मैंने इंटरनेट पर चल रहे अपने दोनों ब्लॉग 'अमिता इन स्पेन ब्लॉग स्पॉट डॉट कॉम'' और रोड टू ला मांचा ब्लॉग स्पॉट डॉट कॉम' खोले और उन्हें फिर अपडेट करने के लिए सोचा। दोनों ही काफी पढ़े जा रहे थे। मुझे लोगों की प्रतिक्रियाएँ खूब-खूब और खूब मिल रही थीं। मैं कम से कम इस बात से तो खुश हो सकती थी कि मेरे ब्लॉग लोकप्रिय हो रहे थे।